Chapter_04
Biology_XII

जनन स्वास्थ्य

Reproductive Health

-विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation : WHO, 1948)_इसके अनुसार जनन स्वास्थ्य का अर्थ जनन के सभी पहलुओं सहित एक सम्पूर्ण स्वास्थ्य अर्थात् शारीरिक, भावनात्मक, व्यवहारात्मक तथा सामाजिक स्वास्थ्य है। इसलिए ऐसे समाज को जनन दृष्टि से स्वस्थ समाज की संज्ञा दी जा सकती है, जिसमें व्यक्तियों के जनन अंग शारीरिक रूप से और क्रियात्मक रूप से सामान्य हो । यौन सम्बन्धी सभी पहलुओं में जिनकी भावनात्मक और व्यावहारिक पारस्परिक क्रियाएँ सामान्य हों, जनन स्वास्थ्य को बेहतर बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण होती है। **विश्व स्वास्थ्य संगठन** (**World Health Organisation : WHO**) के अनुसार, "जनन स्वास्थ्य जनन-संबंधी सभी तथ्यों के साथ एक सम्पूर्ण स्वास्थ्य है।" भारत में सर्वप्रथम **1951** ई० में **परिवार नियोजन कार्यक्रम**' की शुरुआत हुई। जनन संबंधी सभी विषयों की जानकारी हेतु स्वस्थ समाज तैयार करने के लिए जनता को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

 # जनन स्वास्थ्य के विषय में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है_

1. लोगों में जनन स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरुकता की कमी।

2. विद्यालयों में यौन शिक्षा की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

3. लोगों को यौन संचारित रोगों के विषय में जानकारी देना चाहिए।

4. जन्मजात एवं उपार्जित बन्ध्यता ।

5. जनन स्वास्थ्य के लिए जनन-संबंधी समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए।

6. मादा भ्रूण हत्या के लिए एम्नियोसेंटेसिस (amniocentesis) जाँच पर कानूनी प्रतिबंध लगाना चाहिए।

7. यौन संबंधित सभी प्रकार की चिकित्सा विशेष रूप से संपादित होने से माता एवं शिशु मृत्यु-दर में कमी हुई है।

8. लघु परिवार के महत्व को समझना ।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

 # Population growth (जनसंख्या वृद्धि)_ आधुनिक जीवन व्यवस्था की अनेक सुविधाओं के कारण जनसंख्या वृद्धि प्रभावित होती है। 1900 ई० में पृथ्वी की जनसंख्या लगभग 2000 मिलियन (2 अरब) थी, जो तेजी से बढ़कर 6000 मिलियन (6 अरब) हो गई। स्वतंत्रता- प्राप्ति के समय भारत की जनसंख्या लगभग 350 मिलियन, अर्थात 35 करोड़ थी, जो 2000 ई० में बढ़कर एक अरब (1000 मिलियन) हो गई। इसका मूल कारण है, मातृ मृत्यु-दर एवं शिशु मृत्यु-दर में कमी के साथ-साथ जनन-आयु के लोगों की संख्या में वृद्धि। विभिन्न संस्थाओं के अथक प्रयासों के बावजूद इस वृद्धि दर में नाम मात्र की कमी आई। इस प्रकार की जनसंख्या वृद्धि की दर पर अंकुश लगाना अति आवश्यक है। इस समस्या से निपटने के लिए लघु परिवार को बढ़ावा देना चाहिए, जिसके लिए हमें विभिन्न प्रकार के गर्भ निरोधक उपायों को अपनाना चाहिए। विवाह के लिए लड़का एवं लड़की की न्यूनतम आयु-सीमा क्रमशः 21 एवं 18 वर्ष होनी चाहिए।

#जनसंख्या अधिक होने से_

(a) जमीन, खनिज, काष्ठ आदि प्राकृतिक संपदाओं की कमी हो जायेगी।

(b) दिन-प्रतिदिन जनसाधारण का स्वास्थ्य खराब हो जायेगा। परिवार की जनसंख्या वृद्धि होने से जो परिस्थिति उत्पन्न होगी वह परिवार के लिए हानिकारक होगी। जैसे—बच्चे को भोजन में पोषक तत्व की उचित मात्रा नहीं मिलेगी। सबके स्वास्थ्य का उचित देख-रेख संभव नहीं होगा। बच्चे समुचित शिक्षा तथा उचित सम्मान से वंचित होंगे। इसलिए हमें छोटा परिवार रखना चाहिए।

 # Reproductive health Problems and Strategies (जनन स्वास्थ्य समस्याएँ एवं कार्य-नीतियाँ)_

-भारत विश्व का पहला देश था जिसने जनन स्वास्थ्य की कार्य- योजनाओं एवं कार्यक्रमों की शुरुआत राष्ट्रीय स्तर पर किया। इन कार्यक्रमों को परिवार नियोजन के नाम से जाना जाता है। सर्वप्रथम इसकी शुरुआत 1951 में हुई थी। आज के समय में यह व्यापक कार्यक्रम जनन एवं बाल स्वास्थ्य सेवा (RCH) के नाम से प्रसिद्ध है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जनन संबंधी विभिन्न पहलुओं की जानकारी एवं जननात्मक रूप से स्वस्थ समाज तैयार करने के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करवाये जाते हैं। सरकारी एवं गैरसरकारी संगठन ऑडियो-विजुअल एवं मुद्रित सामग्री का उपयोग करके जनन संबंधी पहलुओं के बारे में जागरूक बना रहे हैं। जनन संबंधी सूचनाओं की जानकारी देने में माता- पिता, अन्य निकट संबंधी, शिक्षक एवं मित्रों की मुख्य भूमिका है। विद्यालयों में यौन शिक्षा की पढ़ाई को पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है, ताकि युवाओं को सही जानकारी मिल सके एवं यौन-संबंधी गलत धारणाओं से बचा जा सके। किशोरावस्था के दरम्यान होने वाले शारीरिक परिवर्तन, सुरक्षित एवं स्वच्छ यौन क्रियाएँ, यौन संचरित रोगों की जानकारी किशोर आयुवर्ग के युवाओं में जनन संबंधी स्वस्थ जीवन जीवन को बिताने में सहायक होती है। जनन क्षम जोड़ों तथा वे लोग जिनकी आयु विवाह योग्य है, उन्हें जन्म नियंत्रक उपलब्ध करवाना या इसके विकल्पों की जानकारी देना, गर्भवती माता की देखभाल, माँ और बच्चे की प्रसवोत्तर देखभाल, स्तनपान के महत्व इत्यादि की जानकारी स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होती है। इसके अलावे लड़के एवं लड़कियों को समान महत्व एवं समान अवसर देने की जानकारियाँ प्राप्त होने से स्वस्थ परिवार की परिकल्पना की जा सकती है। अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि से होने वाले समस्याओं, सामाजिक उत्पीड़न, यौन-दुरुपयोग एवं यौन संबंधी अपराधों के बारे में जागरुकता पैदा करने की आवश्यकता है। इस प्रकार कुरीतियों को रोकने एवं जननात्मक रूप से जिम्मेदार एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ समाज को बनाने में आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता प्रत्येक नागरिक का है।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

 # Method to Control Population Growth(जनसंख्या वृद्धि रोकने के विभिन्न उपाय)_

संतति नियंत्रण से ही जनसंख्या वृद्धि में नियंत्रण संभव है। परिवार में संतानों की संख्या सीमित रखने के विषय में जानकारी देने के लिए परिवार नियोजन केंद्र बने हैं। इसमें कार्यरत चिकित्सक या अन्य कर्मचारी जनता को संतति-नियंत्रण के विभिन्न उपाय, यौन-शिक्षा विषयों से संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारी देते हैं। कृत्रिम प्रक्रिया से संतानों की उत्पत्ति को नियंत्रित करना संतति नियंत्रण (birth control) कहलाता है।

निम्नांकित साधनों को अपनाकर संतानोत्पत्ति रोका जा सकता है_

1. हॉर्मोनल विधियाँ (Hormonal Method)_इस प्रकार की युक्तियों में महिलाएँ गर्भनिरोधकों का प्रयोग गोलियों (pills) के रूप में मुँह द्वारा करती हैं। आजकल विभिन्न प्रकार की हॉर्मोनों से बनी गर्भनिरोधक गोलियाँ, जैसे—माला - N एवं माला-D बाजार में मुक्त रूप से मिलती हैं। इन गोलियों का प्रयोग लगातार 21 दिनों तक किया जाता है और इन्हें मासिक चक्र के प्रथम पाँच दिनों में मुख्यतः पहले दिन से ही शुरू किया जाता है। अगले ऋतुस्राव के बाद इन्हें पुनः प्रारम्भ कर दिया जाता है। यह क्रम तब तक जारी रखा जाता है जब तक गर्भनिरोध की आवश्यकता है। ये गोलियाँ अधिक प्रभावशाली तथा कम दुष्प्रभाव वाली होती हैं। सहेली नामक गर्भनिरोधक गोली एक नन-स्टेरॉयड (non-steroid) पदार्थ वाली होती है। इसे हफ्ते में एक बार लिया जाता है। इसकी निरोधक क्षमता उच्च तथा दुष्प्रभाव कम होता है। पर्ल नामक गर्भनिरोधक गोली प्रतिदिन ली जाती है।

2. प्राकृतिक विधि या रतिरोध (Coitus interruptus)_ यह जन्म-नियंत्रण की पुरानी विधि है। यह विधि 2000 वर्ष पूर्व से प्रचलित है। इस विधि में मैथुन क्रिया के समय नर स्खलन से पहले ही शिश्न (लिंग) को बाहर कर लेता है, जिससे शुक्राणु मादा के गर्भाशय तक नहीं पहुँचते हैं, फलतः निषेचन क्रिया नहीं हो पाती है। यद्यपि यह बहुत सरल व सुविधाजनक विधि है किन्तु इसमें अत्यधिक सावधानी एवं संयम की आवश्यकता होती है। इसमें स्खलन समय का अन्दाज होना अति आवश्यक है।स्तनपान अनावर्त विधि में प्रसव के बाद जब तक स्त्री शिशु को भरपूर स्तनपान कराती है तब तक अंडोत्सर्ग और मासिक चक्र शुरू नहीं होता है। इसलिए माता शिशु को जब तक (4-6 माह तक) स्तनपान कराती है तब तक प्रायः गर्भ धारण नहीं करती है।

3. यान्त्रिक विधियाँ या रोध विधियाँ इस रोधक साधन का प्रयोग करके अंडाणु और शुक्राणु को परस्पर मिलने से रोका जाता है। पुरुषों के लिए कंडोम का मशहूर ब्रांडनाम 'निरोध' काफी लोकप्रिय है। आजकल स्त्रियों के लिए भी 'निरोध' बाजारों में उपलब्ध है। इसमें अंतःगर्भाशयी युक्ति (Intra Uterine Divice- IUD) का उपयोग होता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार की युक्तियाँ हैं—लिप्स लूप, **कॉपर-टी** तथा **कॉपर-7** इत्यादि। इसका उपयोग गर्भ धारण में देरी या जो औरत बच्चों के जन्म में अंतराल चाहती है, उनके द्वारा किया जाता है।इसके लिए IUD आदर्श गर्भनिरोधक है। इसे अनुभवी नर्सों द्वारा योनिमार्ग से गर्भाशय में लगाया जाता है। इधर हाल के वर्षों में कंडोम के प्रयोग में तेजी से वृद्धि हुई है, क्योंकि इसके प्रयोग से गर्भ धारण के अतिरिक्त यौनजनित रोगों (sexually transmitted disease) तथा एड्स (AIDS) जैसे रोगों से भी बचा जा सकता है। ये बाजारों में आसानी से उपलब्ध तथा सस्ते होते हैं। इसे सरकार द्वारा मुफ्त भी वितरित किया जाता है। इसे एक बार प्रयोग करने के बाद फेंकना पड़ता है।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

#डायफ्राम, गर्भाशय ग्रीवाटोपी _ ये मानव-निर्मित उपकरण हैं, जो रबड़ से बने होते हैं। सहवास के पूर्व गर्भाशय ग्रीवा को ढँककर शुक्राणुओं के प्रवेश को रोक दिया जाता है। रोधक साधनों के साथ शुक्राणुनाशक क्रीम या जेली का प्रायः इस्तेमाल किया जाता है। गर्भनिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

4. रासायनिक विधि(Chemical Methods)_ स्पर्मिसाइडल रसायन सर्विक्स (cervix) के निकट लगा देने से यह रसायन संभोग के समय स्खलित वीर्य में मौजूद शुक्राणुओं को नष्ट कर देता है।

5. सर्जिकल विधियाँ (Surgical Method)_ इस विधि में शल्य क्रिया द्वारा नर तथा मादा में युग्मकों (ganetes) के गमन को रोक दिया जाता है, जिससे निषेचन नहीं हो पाता है। ये विधियाँ सर्वाधिक प्रभावशाली होती हैं, किन्तु अपेक्षाकृत कम प्रयोग की जाती हैं।

#नर- नसबंदी _ नर-नसबंदी या वासेक्टोमी **(vasectomy)** किया जाता है। इसमें शुक्रवाहिका को काटकर धागे से बाँध दिया जाता है। इससे शुक्राणुओं का प्रवाह स्त्री के योनि में नहीं हो पाता है।

#मादा- नसबंदी_ मादा (female) में फैलोपिअन नलिका **(fallopian tube)** को काटकर धागे से बाँध दिया जाता है। इससे शुक्राणु अंडाणु को निषेचित नहीं कर पाता है। इसे स्त्री नसबंदी या ट्यूबेक्टोमी **(tubectomy)** कहते हैं।

#Medical Termination of Pregnancy (MTP) (सगर्भता का चिकित्सीय समापन अथवा गर्भपात)_

-गर्भावस्था पूर्ण होने से पहले स्वेच्छा से गर्भ को समाप्त करना प्रेरित गर्भपात या चिकित्सीय सगर्भता समापन कहा जाता है। शल्य चिकित्सक इस कार्य को करने के पहले भ्रूण की जाँच करके देखते हैं कि उसमें आनुवंशिक बीमारी के लक्षण हैं या नहीं। आनुवंशिक बीमारी के लक्षण होने पर भ्रूण के माता-पिता के इच्छानुसार 3-4 महीने के अंदर गर्भपात करा दिया जाता है। यह आजकल कानूनन मान्य है। लेकिन आज सगर्भता समापन से साधारणतः मादा भ्रूण की हत्या की जाती है, जो गैर कानूनी है। इसे रोकने के लिए 1971 ई० में भारत सरकार ने कानूनी स्वीकृति दे दी थी। गर्भावस्था के तीन महीने तक गर्भपात सुरक्षित होता है। छः महीने पूरा हो जाने पर गर्भपात कराना घातक होता है यदि अकुशल हकीमों से गर्भपात कराया जाए तो यह माता एवं शिशु दोनों के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इसलिए इस तरह के हानिकारकप्रवृत्तियों को रोकना चाहिए।

ATM Institute Classes

#Amniocentesis (एम्नियोसेंटेसिस)_

-इस विधि द्वारा स्त्री के गर्भ में विकसित हो रहे भ्रूण के लिंग (sex). आनुवंशिक स्थिति तथा उसमें आनेवाली विकृति की सम्भावनाओं को ज्ञात किया जाता है। अर्थात यह रोगों का जन्म-पूर्व पता लगाने की विधि है, लेकिन आजकल इस तकनीक का प्रयोग भ्रूण के लिंग का पता करके इसका गर्भपात (abortion) कराने तक सीमित रह गया है। इसलिए सरकार ने इस तकनीक के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसमें माता के गर्भाशय (womb) से सुई द्वारा एम्नियोटिक द्रव (amniotic fluid) को नमूने के लिए निकाला जाता है। एम्नियोसेंटेसिस अपने-आप में हानिकारक नहीं है। किसी आनुवंशिक दोष में DNA की संरचना में दखल देने के हमारे सपने को केवल एम्नियोसेंटेसिस के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। अगर यह गर्भपात की तरफ पहला कदम है तो साथ ही यह जीन उपचार (gene therapy) की तरफ भी पहला कदम है। हमें स्क्रीनिंग (screening) और काउंसिलिंग (counselling) का विरोध नहीं करना चाहिए, अगर यह मनुष्य जाति के संपूर्ण विकास के लिए किया जा रहा हो। मानव समुदाय (जाति) आनुवंशिक रोग से बहुत समय से पीड़ित रहा है। अब समय आ रहा है जब हम इससे मुक्ति पा सकते हैं।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

#Sexually transmitted disease (यौन संचारित रोग)_

-वे बीमारियाँ जो सामान्यतः लैंगिक सम्पर्क द्वारा फैलती हैं उसे यौन-संचारित रोग (STD) कहते हैं। ये रोग बहुत ही हानिकारक होते हैं। कुछ यौन संचारित रोग निम्नलिखित हैं _ जैसे- **गोनोरिया, सिफैलिस, हर्पिस, क्लेमिडियता, लैंगिक मस्से** एवं विशेष खतरनाक एच.आई.वी (HIV, Human Immunodeficiency Virus) के द्वारा होने वाली बीमारी एड्स (**AIDS** _ Acquried Immune Deficiency Syndrome) ।

1. बैक्टीरिया निसेरिया गोनोरी (nisseria gonorrhoeae) के कारण पुरुष की मूत्रनली तथा स्त्रियों में गर्भाशय की ग्रीवा संक्रमित होती है। इस लैंगिक रोग को गोनोरिया (gonorrhoea) कहते हैं ।

2. बैक्टीरिया ट्रेपोनेमा पैलिडम (treponema pallidum) के कारण बाह्य जननांगों की त्वचा में दाने निकल आते हैं। इस प्रकार के यौन रोग को सिफलिस (syphilis) कहते हैं।

3. प्रोटोजोआ, ट्राइकोमोनास भैजिनैलिस (trichomonas vaginalis) द्वारा स्त्रियों की मूत्र-जनन नलिकाओं से संक्रमण के कारण योनि से स्राव होता है।

4. यीस्ट-जनित रोग कैनडिडा एलबिकिंस नामक यीस्ट के संक्रमण से होता है। इस रोग में पुरुषों के शिश्न के शिखर भाग में स्थित मुण्ड (glans) में एवं स्त्रियों के बाह्य जननांगों में खुजली होती है।

5. हर्पिस सिम्प्लेक्स वाइरस II (herpes simplex virus II) द्वारा बाह्य जननांगों में अत्यधिक जलनयुक्त छाले (blisters) निकल जाते हैं। इस वाइरस संक्रामक रोग को हर्पिस कहते हैं। 6. ह्यूमैन पैपिलोमा वाइरस (human papilloma virus) के संक्रमण से योनि, वल्वा, शिश्न या गुदाद्वार में मस्सा (warts) निकल जाते हैं।

7. एड्स एक गंभीर संक्रामक रोग है, जिसे एड्स, एक्वायर्ड इम्यून डेफिसिएंसी सिंड्रोम (Acquired Immune Deficiency Syndrome : AIDS) कहते हैं, जो मनुष्य में HIV (Human Immunodeficiency Virus) द्वारा संक्रमित होता है। इससे शरीर की प्रतिरक्षा की क्षमता कम हो जाती है एवं इस कारण रोगी को विभिन्न प्रकार के संक्रमण होने लगते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति (परुष/स्त्री) अगर AIDS से संक्रमित व्यक्ति (पुरुष/स्त्री) के साथ संभोग करता है तब स्वस्थ व्यक्ति (पुरुष/स्त्री) भी इस रोग का शिकार हो जाता है। इसका एक और विशेष कारण है, यदि AIDS से संक्रमित व्यक्ति के रुधिर को दूसरे स्वस्थ व्यक्ति को चढ़ाया जाए तो स्वस्थ व्यक्ति भी इस बीमारी का शिकार हो सकता है। HIV से संक्रमित गर्भवती महिला से उसके भ्रूण में इस रोग का संचरण हो सकता है यह रोग 1980 के पूर्व प्रकाश में आया एवं 1981 में USA में इसके कारण ज्ञात हुए।

#इन संक्रमणों से भविष्य में साधारण नियमों का पालन करके बचा जा सकता है_

1. किसी अनजान व्यक्ति या बहुत-से व्यक्तियों के साथ यौन-संबंध न रखें।

2. मैथुन के समय सदैव कंडोम का इस्तेमाल करें।

3. यदि कोई आशंका है तो तुरंत ही प्रारंभिक जाँच के लिए किसी योग्य डॉक्टर से मिलें और रोग का पता चले तो पूरा इलाज कराएँ।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

#Diagnosis of sexually transmitted disease (STD की जाँच)_

-STD रोग की जाँच साधारणतया यौन रोग रिसर्च प्रयोगशाला (VDRL) में किया जाता है। कुछ जाँच निम्नलिखित हैं-

1. संवर्धक द्वारा माइक्रोस्कोप में विशेष रंजक

2. DNA संकरण (DNA hybridisation)

3. पॉलीमिरेज चेन प्रतिक्रिया (PCR)

4. विशेष प्रकार के एंटीजेन एंटीबॉडी की जाँच (ELISA) याअन्य किसी प्रक्रिया।

#Infertility (बंध्यता)_

-भारत सहित पूरी दुनिया में बहुत से दम्पत्ति उन्मुक्त या असुरक्षित सहवास (sexual intercourse) के बावजूद बच्चे पैदा नहीं कर पाते हैं अर्थात वे बंध्य होते हैं। ये समस्याएँ पुरुष अथवा स्त्री किसी में भी हो सकती है। इनमें से कुछ विकारों को उपचार करके दम्पत्तियों को बच्चे पैदा करने में सहायक हो सकती हैं। फिर भी जहाँ ऐसे दोषों को ठीक करना सम्भव नहीं हो, वहाँ कुछ विशेष तकनीकों द्वारा उनको बच्चा पैदा करने में मदद की जा सकती है। यह तकनीक सहायक जनन प्रौद्योगिकी (Added Reproductive Technique : ART) कहलाती है।

#कुछ निम्नांकित तकनीकों का उपयोग करके बच्चा पैदा किया जाता है_

1. कुछ स्त्रियाँ अंडाणु उत्पन्न नहीं कर सकती। लेकिन निषेचन एवं भ्रूण के परिवर्धन के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान कर सकती हैं। इनमें अन्य दाता स्त्रियों से अंडाणु लेकर इनके फैलोपी नलिका में स्थानांतरित कर दिया जाता है एवं पुरुष के शुक्राणु से निषेचन कर दिया जाता है।

2. इस प्रक्रिया में सीधे शुक्राणु को अंडाणु से सम्मिलित किया। जाता है, जिसे अंतःकोशिकीय शुक्राणु निषेचन (ICSI) कहते हैं।

3. संतान प्राप्ति के लिए दाता पुरुष से शुक्र लेकर कृत्रिम रूप से स्त्री की योनि में या उसके गर्भाशय में प्रविष्ट किया जाता है, जिसे अतः गर्भाशय वीर्य सेचन कहते हैं। इस तरह की प्रक्रिया तब की जाती है जब कोई पुरुष किसी स्त्री को वीर्य सेचित नहीं कर पाता है या जिस पुरुष के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या बहुत कम होती है।

4. परखनली शिशु (Test tube baby)_ अनेक स्त्रियों में अण्डाशय (ovaries) तथा गर्भाशय (uterus) सामान्य होते हैं, किन्तु अण्डवाहिनियाँ (oviducts) विकृत होती हैं या फिर उनके पतियों में शुक्राणु की संख्या कम उत्पन्न होती है। इस कारण स्त्रियाँ गर्भ धारण नहीं कर पाती हैं। ऐसी स्थिति में विशेषज्ञों द्वारा किसी स्त्री के गर्भाशय से अण्डाणु प्राप्त करके इसका प्रयोगशाला में उस स्त्री के पति के शुक्राणु द्वारा निषेचन कराया जाता है एवं कृत्रिम रूप से निर्मित भ्रूण को उस स्त्री के गर्भाशय में स्थानांतरित कर दिया जाता है और शिशु सामान्य रूप से जन्म लेता है। इसे परखनली शिशु (test tube baby) कहते हैं। उपर्युक्त सभी विधियों द्वारा संतान की प्राप्ति भारत में कुछ धनी लोग ही कर सकते हैं। हमारे देश में ऐसे अनेक गरीब एवं अनाथ बच्चे हैं, जिन्हें देखभाल की आवश्यकता है। इनकी रक्षा करने के लिए हमारे देश में कानूनन लोग इन्हें गोद ले सकते हैं। यह सबसे सहज उपाय है, जिससे संतान की प्राप्ति हो सकती है।

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.